राजयोगी ने दी मौत को मात

योग की बदौलत ब्रेन ट्यूमर पर महाविजय हासिल कर ली। सिर्फ ब्रेन ट्यूमर ही नहीं था उन्हें, बल्कि लकवे की वजह से शरीर भी उनका पूरा सुन्न पड़ गया था। लेकिन कहते हैं जाको राखे साइयां मार सके ना कोई। ज़िन्दगी जब ठान लेती है तो फिर मौत भी अपने कदम पीछे खींच लेती है। कहा जाता है कि जीने का जुनून ज़िन्दगी को मौत की मचान से उतार लाता है। दुश्वारियों के आगे खुशियाँ होती हैं, हौसले के आगे परवाज़ होती है और डर के आगे जीत होती है। नीमच के राजयोगी ब्र.कु. सुरेन्द्र जैन को जो भी देखता है वो उनके हौसले की दाद देता है। बेसाख्ता बोल पड़ता है जाको राखे साइयां मार सके ना कोई। दर्द की ये कहानी सुनने के बाद आश्चर्य होता है। लेकिन दिल खुशी से झूम उठता है, आसमान देखती आँखें बुदबुदाती हैं कि कुदरत के क्या कहने...!

राजयोगी सुरेन्द्र जैन के ब्रेन में नौ ट्यूमर होने के बाद चिकित्सकों ने आपस में सलाह मशवरा किया तथा देश के नामचीन डॉक्टरों से इसके बारे में राय ली। लेकिन हर कोई हतप्रभ था कि कैसे ये हो सकता है, कैसे किसी को नौ ट्यूमर होने के बाद भी आदमी जीवित रह सकता है! कैसे आम आदमी की तरह वो हँस बोल सकता है। लेकिन उपचार के नाम पर किसी के पास भी कोई इलाज नहीं था।

दरअसल मध्य प्रदेश नीमच के रहने वाले सुरेन्द्र जैन को 1993 में ब्रेन ट्यूमर हो गया था। डॉक्टर के पास पहुँचे तो अहमदाबाद न्यूरोलॉजिस्ट ने सी.टी. स्कैन देख कर बताया कि उनके ब्रेन में नौ ट्यूमर हैं। किसी तरह से भारी मन से डॉक्टर ने सुरेन्द्र जैन को भर्ती तो कर लिया लेकिन कुछ ही दिन बाद जवाब भी दे दिया कि इनका इलाज सम्भव नहीं है। मायूस परिजन सुरेन्द्र को अस्पताल से घर लाये। इसी दौरान सुरेन्द्र पर पैरालाइसिस का अटैक भी हुआ। सुरेन्द्र की गर्दन टेढ़ी हो गई। हाथ और पैर मुड़ गये, आँखों से दिखना बंद हो गया और इसके साथ ही आवाज़ भी बंद हो गई। जो भी सुरेन्द्र को देखता, प्रणाम कहता और आँसू बहाकर चला जाता।

बीमारी में आप बीती का अनुभव

ब्र.कु. राजयोगी सुरेन्द्र से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि सबसे पहले मुझे 1993 में हल्का-हल्का चक्कर आने लगा। आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा। तो मैं उसको इग्नोर करता रहा कि ये तो नॉर्मल बातें होती हैं। लेकिन फिर धीरे-धीरे सिर में दर्द शुरू हुआ और अचानक कभी कभी काफी तेज़ दर्द हो जाता था। कभी-कभी आँखों से दिखना भी बिल्कुल ही बंद हो जाता था। तो फिर मैंने डॉक्टर से सम्पर्क किया। हमारे नीमच के बहुत प्रसिद्ध फिज़ीशियन हैं, उनके पास जाना हुआ। उन्होंने कुछ ट्रीटमेंट दिया 5-7 दिन तक, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। बल्कि और ही दर्द बढ़ता गया। आँखों से दिखना कभी-कभी बंद हो जाता था तो उन्होंने आई स्पेशलिस्ट के पास भेजा। बड़ा प्रसिद्ध अस्पताल है हमारे नीमच में नेत्रों का। वहाँ चेक करने के बाद पाया गया कि मेरी आँखों के ऊपर ट्यूमर चढ़ा हुआ है।

9 ब्रेन ट्यूमर के बाद भी उमंग उत्साह बरकरार

शरीर की ऐसी स्थिति हो जाने के बाद भी सुरेन्द्र के दिल में जीने की आग धधक रही थी। वो जीना चाहते थे। दुश्वारियों से लड़कर, परेशानियों को तोड़कर चारो तरफ से निराशा से घिरे सुरेन्द्र के परिवार वाले सुरेन्द्र को सिरोही के ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान माउंट आबू लेकर आये जहाँ आध्यात्मिकता के ज़रिये उनका मेडिटेशन के द्वारा इलाज किया गया। धीरे-धीरे मेडिटेशन करने के बाद सुरेन्द्र के शरीर में अचानक बदलाव होने लगा और उनके शरीर के सभी हिस्से काम करने लगे। और फिर एक ऐसा वक्त आया कि सुरेन्द्र जैन एक आम व्यक्ति की तरह चलने-फिरने लगे और लोगों से बातचीत भी करने लगे। नौ ट्यूमर होने के बावजूद भी उनके शरीर में हुए सुधार से हर कोई खुश था। इस तरह धीरे-धीरे आज 25 साल हो गये हैं। डॉक्टर्स भी हैरान हैं कि ये कैसे सम्भव हो सकता है! डॉक्टर्स सोचने पर विवश हो जाते हैं कि ये कैसे हो रहा है! जब डॉक्टर्स उनसे बात करते हैं तो सुरेन्द्र भाई कहते हैं कि परमात्मा द्वारा सिखाये गये मेडिटेशन की ही कमाल है। मैं रोज़ सुबह तीन बजे उठकर राजयोग मेडिटेशन करता हूँ और परमात्मा से जो गाइडेंस मिलती है उसके अनुरूप ही जीवन जीता हूँ। मैंने कभी भी उनके बताये गये मार्ग का उल्लंघन नहीं किया, पूरा ही उसे फॉलो करता हूँ। वो कहते हैं कि ट्यूमर तो मेरे लिए वरदान है। नौ ट्यूमर जैसे कि मेरे लिए नवरत्न के समान हैं। परमात्मा में अटूट निश्चय और विश्वास से ही ये सम्भव हुआ है।

सुरेन्द्र जैन आज ब्रह्माकुमारीज़ में अपनी सेवायें दे रहे हैं। नीमच क्षेत्र से जुड़े राजयोग सेवाकेन्द्र का सकुशल निर्देशन भी कर रहे हैं। वे संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी भाई हैं। बड़े ही कर्मठ, परमात्मा में अटूट विश्वास और निश्चय के बल पर कार्य कर रहे हैं, जोकि उनका कार्य देखते ही बनता है। बड़े सरल और हँसमुख हैं। ना ही मरने का खौफ़ है और ना ही बीमारी का कोई ग़म है। बस जीवन का आनंद ले रहे हैं। वे नियमित राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करते हैं। वे खाने को सदा प्रभु प्रसाद के रूप में स्वीकार करते हैं और ईश्वरीय सेवाओं में मशगूल रहते हैं। उनका ये नया जीवन समाज के नैतिक और चारित्रिक उत्थान के लिए समर्पित है।

आध्यात्मिक ज्ञान होने के कारण खुद भी बहुत खुश और संतुष्ट रहते हैं और अपनी लाइफ के द्वारा सबको भी यही प्रेरणा देते हैं कि आप सब भी इन बातों में निराश न हों। आप लोग भी इस ईश्वरीय ज्ञान को अपने जीवन में धारण कर अपने आपको खुश रखिए।

डॉक्टर्स भी हुए आश्चर्यचकित

2003 में सुरेन्द्र जैन को ब्रेन स्ट्रोक आया। उस समय उन्हें नीमच के एक अस्पताल में भर्ती किया गया जहाँ न्यूरोफिज़ीशियन ने अहमदाबाद रेफर कर दिया। वहाँ सुरेन्द्र जैन की थ्री.डी. एम.आर.आई. कराई गई। इसमें बाईं तरफ ट्यूमर के अंगूर की तरह गुच्छे और दाईं तरफ एक और बड़ा ट्यूमर दिखा। जिसे देखकर डॉक्टर्स हैरान हो गये कि इतने ट्यूमर के बाद भी इंसान आखिर ज़िंदा कैसे रह सकता है! डॉक्टर्स का कहना था कि ऐसे हालात में आदमी जीवित नहीं रह सकता। ट्यूमर कभी भी फट सकता है।

साथी भाई बहनों से हुई उनके बारे में बातचीत

उनके साथ ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर रहने वाले भाई बहनों से बात की तो उन्होंने बताया कि हम लोग भाई साहब के सम्पर्क में 1998 से हैं और तब से हम उनको देख रहे हैं। लेकिन पहली बार हमारे सामने स्ट्रोक 2013 में आया। उस वक्त हमें तो यही लगा कि शायद ऐसा कुछ मज़ाक है। इतने में उनकी आवाज़ भी बंद हो गई और हाथ भी थोड़ा तिरछा हो गया लेकिन ऐसे समय पर भी उन्होंने अपने मनोबल को बहुत मज़बूत रखकर और बहुत खुशी से इस बीमारी को स्वीकार किया। अध्यात्म में जब किसी चीज़ को स्वीकार कर लेते हैं तो उससे उस पर विजय वैसे ही हो जाती है। ये हम अभी भी देख रहे हैं। कमाल तो प्यारे शिव बाबा की है कि जो साइंस न कर सका वो परमात्मा से ली गई साइलेंस पॉवर ने कर दिखाया।

ब्र.कु. राजयोगी सुरेन्द्र ने राजयोग से मौत को हराकर ज़िन्दगी पर विजय पाई। सुरेन्द्र आज भी स्वस्थ हैं और मेडिटेशन करते हैं। कहते हैं ना, जो ज़िन्दगी जीना चाहे तो मौत भी उन्हें मार नहीं सकती। करीब 26 वर्षों से मौत को मात दे रहे ब्र.कु. राजयोगी सुरेन्द्र जी आज हमारे बीच हैं। हमारे बीच हँस बोल रहे हैं। आम व्यक्ति की तरह चल फिर रहे हैं। अध्यात्म से इन्होंने एक नई ज़िन्दगी ली है। जो सभी के लिए एक प्रेरणा का सबक है।

इगलास-हाथरस। शिवजयन्ती के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में रैली द्वारा शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. हेमलता तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

दिल्ली-केशव पुरम। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा द्वारा शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

लश्कर-ग्वालियर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा 'नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर' में स्वास्थ्य जाँच करवाते भाई-बहनें।